भाषा कौशल (LANGUAGE SKILLS)

1. **निम्न वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।**

   (क) श्रीकृष्ण का जन्म स्थान मथुरा है।

   (ख) यशोदा माता ने श्रीकृष्ण का लालन-पालन किया।

   (ग) सूरदास जी जन्मांध थे।

   (घ) कबीरदास जी का जन्म काशी में हुआ था।

2. **नीचे लिखे ब्रज भाषा के शब्दों का प्रचलित हिंदी रूप लिखिए।**

   (ख) दुलराई – **दुलराती है**
   (ग) बेगहिं – **शीघ्रता से**
   (घ) गावै – **गाती है**
   (ङ) धूरि – **धूल**
   (च) भाग – **हिस्सा**
   (छ) सोवत – **सोना**
   (ज) निंदरिया – **नींद आना**
   (झ) सुवावै – **सुलाती है**
   (ण) सौं – **सोना**
   (ट) कबहुँ – **कब**
   (ठ) कछु – **कुछ भी**

3. **दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

   (क) गिरधर – **प्रभु** **ईश्वर**
   (ख) कमल – **पंकज** **नीरज**
   (ग) जगत – **संसार** **विश्व**
   (घ) पंछी – **खग** **चिड़िया**
   (ङ) मौरा – **मम** **मेरा**

2. **सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए।**

(क) मीराबाई ने किनके पास बैठकर ज्ञान प्राप्त किया? – (ii) कृष्ण मंदिर में

(ख) सूरदास जी के पहले पद में किस घटना का वर्णन है? – (ii) कृष्ण को सुलाने का

(ग) जो सुख-सूर अमर मुनि दुरलभ, सो नंद भामिनि पावै।
किस सुख की बात की जा रही है? – (i) कृष्ण की चंचलता देखने का

(घ) यहाँ 'सूर' शब्द का क्या अर्थ है? – (iii) कवि सूरदास

(ङ) ईश्वर कहाँ विराजते है? – (iii) हमारी साँसों में

3. **भाव स्पष्ट कीजिए।**

(क) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई।

उ0. मीराबाई कहती है कि श्रीकृष्ण ही मेरे सब कुछ है अन्य और किसी से मेरा कोई संबंध नहीं है। जिसके सिर पर मोर-मुकुट हो वही मेरे पति है। इसलिए मैं श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानती हूँ।

(ख) कबहु पलक हरि मुँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन है कै रहि, करि-करि सैन बतावै।।

उ0. यशोदा कृष्ण को पालने को हल्का हिला देती तो कभी कृष्ण को प्यार करने लगती तो कभी उनके मुख को चुमने लगती हैं। ऐसा करते हुए वह अपने मन की करते हुए गुनगुनाने लगती हैं। फिर भी कृष्ण को नींद नहीं आ रही है।

(ग) या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहुँ पुर कोतजि डारौ।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख, नंद की गाय चराइ बिसारौं।

उ0. द्वारिका में रहकर कृष्ण को ब्रज की याद आ रही है। वे उदास होकर रुक्मणी से कह रहे हैं कि उस लाठी और कामरी के लिए मैं तीनों लोक का राज्य एक दम छोड़ देने को तैयार हूँ। नंद की गाय चराने के लिए अणिमा आदि आठों सिद्धियों के तथा आदि नवों निधियों के सुख का त्याग करने को उद्धत हूँ।